# गज़ल का प्रादुर्भाव एवं विकास

**Jyoti Sharma**
Assistant Professor, Jawahar Lal Nehru Govt. College, Tooran, Mandi Gobindgarh

## गज़ल का अभिप्राय एवं परिभाषा

भारतीय काव्य–जगत एवं संगीत जगत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना 'गज़ल' है। गज़ल के साहित्यिक पक्ष के सन्दर्भ में अलग–अलग विद्वानों ने अलग–अलग परिभाषाएं दी हैं। सामान्य गज़ल को हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बयान कराने की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है। गज़ल को प्रेयसी (प्रेमिका) से बातचीत करने तथा उसके नख–शिख का वर्णन करने का साधन भी कह जाता रहा है। गज़ल का अर्थ ''कातने–बुनने'' से भी लिया गया है। गज़ल के सन्दर्भ में विभिन्न साहित्यिकारों एवं शायरों ने अपने विचार प्रकट किये हैं–

राम नरेश त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक कविता कौमुदी में गज़ल को जवानी का हाल बयान करने वाली और माशूक की संगति व इश्क का ज़िक्र करने वाली अभिव्यक्ति कहा गया है।

अयोध्या प्रसाद के अनुसार, ''गज़ल का अर्थ इश्किया अशआर कहना और औरतों का वर्णन करना है।''

श्री परांजपे ने कहा कि गज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्य–गत शैली है तथा इसमें प्रणय–प्रधान गीतों का समावेश होता है, तथा मोहब्बत के जज़्बातों की अभिव्यक्ति है।

फिराक गोरखपुरी ने कहा कि गज़ल महबूब से बातचीत करने को कहते हैं।

अरबी–फारसी की परम्पराओं को मान्यता देने वाले गज़ल को 'सुखन–ब–ज़ना' अर्थात औरतों के बारे में बात करना या आशिक–माशूक की बातचीत मानते हैं।

अरबी में गज़ल का शाब्दिक अर्थ कातना–बुनना होता है। गज़ल शब्द की उत्पति 'गज़ाल' से भी स्वीकारी जाती है, जिसका अर्थ 'हरिण' होता है और इसके आधार पर गज़ल को हरिण की चौकड़ी की तरह प्रेम व्यापार की काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी कहा जाता है।

गज़ल के इतिहास पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो यह बात पता चलती है कि अरबी भाषा में 'कसीदा' काव्य की एक विद्या थी जो किसी की प्रशंसा से सम्बन्धित काव्य रचना होती थी। कसीदे के प्रारम्भ में चार–पाँच शेर कहे जाते थे जिसे 'नसीब' या 'तश्बीब' कहते थे। कसीदे की यही तश्बीब आरम्भ में गज़ल के रूप में स्वीकारी जाती थी। अरबी साहित्य में गज़ल का स्वतंत्र स्थान नहीं था।

अरबी साहित्य से जब यह विद्या फारसी काव्य विद्या में आई तो इसने अपना स्वतंत्र रूप ग्रहण किया।

गज़ल अरबी भाषा शब्द है। इसका सामान्य अर्थ होता है प्रमिका से बातचीत य गुफ्तगु करना। लेकिन यह देखकर आश्चर्य होता है कि गज़ल अरब में नहीं लिखी गई। यह लफ्ज़ ईरान में आया और वहां से गज़ल शुरू हुई।

अधिकांश विद्वान लोग गज़ल को फारसी शब्द की उपज मानते हैं। फारसी में गज़ल का प्रथम प्रमुख शायर 'रोदकी' था जिसने गज़ल पर खास ध्यान दिया और अब से लगभग एक हज़ार वर्ष पहले ईरान को एक गौरवशाली स्थान दिलाया। गज़ल की पैदाईश फारस के लोक–संगीत से हुई और यहां से इसका प्रसार अरब, मिश्र तथा भारत आदि देशों में हुआ। गज़ल का शाब्दिक अर्थ मुहब्बत के जज़्बात व्यक्त करना है। अच्छी गज़ल वह है जिसमें इश्क और महोब्बत की सच्चाई, असर के साथ ज़ाहिर की जाती है। गज़ल की प्रभावात्मकता उसके भाव और भाव–प्रदर्शन की शैली में है।

गज़ल सर्वप्रथम ईरान और तुर्कीस्तान आदि देशों में प्रचलित थी। भारत में यह तुर्की आक्रमणकारियों के साथ और अपने विशिष्ट गुणों के कारण भारतवासियों में भी अत्यन्त प्रचलित हो गई। भारत में गज़ल को प्रतिष्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राजकवि अमीर खुसरो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

गज़ल को व्यापकता प्रदान करने में और उसे नया आयाम देने में मीर, गालिब, इकबाल, फिराक, दुष्यन्त कुमार आतिश, अहमद फराज़, फैज़ अहमद फैज़ नासिर काज़मी आदि शायरों का बहुत योगदान रहा है। इन्हीं सब और ऐसे कई अन्य शायरों के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप उर्दू–काव्य जगत में और इससे भी आगे कहा जाए तो काव्य जगत में गज़ल एक शैली बनाकर उभरी है जो अपने ढंग और स्वरूप में अन्य काव्य–विधाओं से कहीं आगे और निराली नज़र आती है। इसका प्रभाव व्यापक और अनोखा दिखाई पड़ता है।

गज़ल इश्क और जवानी को लेकर लिखी जाती है। महबूब का सौन्दर्य इसकी प्रेरणा शक्ति है। यह कवि के अन्तर्मन की आवाज़ है। गज़ल एक अंतर्मुखी काव्य रचना है। इसमें कवि अंतरमन का विश्लेषण और विवेचन करता है। वह अपने व्यक्तित्व को ही अभिव्यक्ति देता है। गज़ल का प्रत्येक शेर जीवन के खट्टे–मीठे अनुभव का ही होता है। गज़ल एक शीतल लहर भी है और चिंगारी भी है। यह अधिकांश यथार्थ पर ही टिकी होती है।

'गज़ल' मानवीय संवेदनाओं से ही ओत–प्रोत होती है। इसमें कल्पना की पूर्ण उड़ान भी रहती है परन्तु वह स्वाभाविक–सहज और प्रभावशाली होती है। गज़ल यथार्थ पर खड़ी होकर कल्पना और स्वपनों के संसार में विरचण करती रहती है। यह खुशबू भी है और खुशी भी। यह दर्द भी है और

आनन्द भी। वास्तव में यह कवि के हृदय का, जीवन का वह दर्पण है जिससे कवि कभी भाग नहीं सकता। गज़ल मानवीय हृदय से ही फूटती है और सबसे अधिक उसे ही प्रभावित करती है। कवि के चिन्तन, मनन, अध्ययन, अनुभव और रूचियां ही इसमें वाणी पा जाती है।

## गज़ल का स्वरूप एवं संरचना

'गज़ल की शायरी एक अपना ढंग रखती है। इसकी रचना विवध छन्दों में होती है, जो संस्कृति के चामर, राधिका तोटक आदि छन्दों से कुछ मिलते जुलते हैं। इसके अनेक चरण होते हैं। दो चरणों का एक खंड 'शेर' कहलाता है। गज़ल में कम से पाँच तथा अधिक सत्तरह 'शेर' होते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध में कोई कड़ा नियम नहीं। शेर के दो समचरण 'मिसरा' कहलाते हैं। शेर के अन्त में जिन शब्दों की पुनरावृति होती है, उन्हें 'रदीफ' कहते हैं जो यमक से मिलता–जुलता है। इसके पहले आने वाले समान ध्वनि वाले वर्ण 'काफिया' कहलाते हैं। जो कि अनुप्रास के पर्याय स्वरूप हैं। जिस शेर के दोनों मिसरों का रदीफ और काफिया समान हो उसे एक अलग अन्दाज़ होता है। गज़ल की एक स्वतन्त्र पहचान होती है। उर्दू का गज़ल काव्य विशेष चमत्कारपूर्ण होता है, इसका प्रमाण उर्दू–मुशायरों की सफलता है। उर्दू का ऐक शेर श्रोताओं को जितना चमत्कृत कर सकता है, उतना शायद किसी दूसरी भाषा का द्विपद नहीं। जितने अधिक चमत्कारी द्विपद उर्दू काव्य में मिल सकेंगें, उतने किसी अन्य भाषा में नहीं। गज़ल का क्षेत्र बहत व्यापक है। बौद्धिकता और भावुकता का इसमें सुन्दर संगम देखने को मिलता है। इसमें भावों की तीव्रता और प्रवाह बना रहता है।

## गज़ल का सांगीतिक प्रादुर्भाव एवं विकास

भारतीय संगीत का इतिहास अति प्राचीन है। यह भी सर्वविदित है कि हिन्दुस्तानी संगीत हिन्दू, मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय की एक श्रेष्ठ सांगीतिक परिणति है। हिन्दुस्तानी संगीत की प्रत्येक विद्या में चाहे वह कंठ संगीत हो, वाद्य संगीत हो अथवा नृत्य हो, हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों का मेलजोल स्मष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अरब के साथ भारतवर्ष के व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत प्राचीन रहें हैं। सम्बन्धों की यह प्राचीनता हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में भी देखने को मिलती है।

भारतीय गज़ल गायन शैली का प्रारम्भ कब से हुआ तो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है परन्तु कुछ तथ्यों के आधार पर यह स्वीकारा जा सकता है कि 13वीं शताब्दी से पूर्व ही गज़ल गायन शैली का प्रचलन भारत मे हो चुका था। गज़ल गायन शैली का प्रसार करने में सूफी सन्तों का बड़ा योगदान रहा है। इसके द्वारा सूफी–सन्तों ने विभिन्न धर्मों के बीच तथा विभिन्न पंथों के बीच में सामांजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। भारत में गज़ल तथा कव्वाली के प्रवर्तन का श्रेय 13वीं ईसवीं के प्रसिद्ध सुफी सन्त 'मुईनुद्दीन चिश्ती' को जाता है। उन्होंने स्वयं फारसी तथा हिन्दी में गज़लें लिखीं। गज़ल को प्रतिष्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राजकवि 'अमीर खुसरो' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वे राजकवि होने के साथ अच्छे गज़ल गायक भी थे।

गज़ल का विकास मुगल काल से ही शुरू हुआ। यह काल संगीत व ललित कलाओं का 'अगस्टन युग' माना जाता है। 'बाबर' स्वयं संगीत प्रेमी है और गीतों की रचना करता था। अकबर संगीत और शायरी का रसिक था। शाहजहाँ के काल में नासिर अफज़ली इलाहबादी और पंडित चन्द्रभान उर्दू–गज़लों के प्रसिद्ध शायर हुए तथा रोज़ा और अकबर उस समय के मशहूर गज़ल गायक थे।

औरंगजेब के युग में संगीत पर ग्रहण लगा। औरंगजेब के बाद मुहम्मद शाह रंगीले ने संगीत को पुनः आश्रय दिया। संगीत का यह रीति–काल गज़ल गायन के लिए पोषक सिद्ध हुआ। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह ज़फर के काल के बाद भी अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में गज़ल गायकी का उतरोतर विकास होता गया।

आज हिन्दुस्तानी संगीत में गज़ल गायन शैली जितनी प्रचार और प्रसार में आई है उतनी अन्य कोई शैली नही। जनसाधारण से लेकर उच्च वर्ग के लोगों तक गज़ल गायन सुनने को अपना सौभग्य मानने हैं तथा गायक–गायिकाएं भी इस शैली को खूब अपनाने लगे हैं। आज जितने गायक–गायिकाएं गज़ल गायकी को अपनाये हुए हैं उतनी संख्या में संगीत की किसी भी अन्य शैली को अपनाने वाले नहीं हैं।

## गज़ल का साहित्यिक प्रादुर्भाव एवं विकास

भारत एक ऐसा देश रहा है जिसमें अति–प्राचीन काल से विभिन्न जातियां आती रही हैं। इन जातियों में से कुछ यहीं घुलमिल गई और यहीं की होकर रह गई। जब किसी देश में बाहर की जातियों का विलय होता है तो यह निश्चित है कि इस प्रक्रिया में एक दूसरे की संस्कृति का आदान–प्रदान होता है, जिसके फलस्वरूप एक नई संस्कृति जन्म लेती है। इस विलय की प्रक्रिया में एक–दूसरे की कुछ मान्यताओं को स्वीकारा भी जाता है तथा कुछ मान्यताओं को अस्वीकारा जाता है। आदान–प्रदान की इस प्रक्रिया में साहित्य, संगीत, स्थापत्य, कला एवं संस्कृति का प्रभाव भी एक–दूसरे पर अवश्य होता है।

जब 12वीं शताब्दी में तुर्क सुल्तानों का शासन स्थापित हो गया तो उसके साथ ही एक–दूसरे की संस्कृति में भी समन्वय की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। भाषा के नाम पर तुर्क अपने साथ 'फारसी' भाषा एवं काव्य विद्या के रूप में 'कसीदा', 'मसनवी' और 'गज़ल' की विरासत साथ लाए थे।

13वीं शताब्दी काल में अमीर खुसरो ने अपनी गज़लों में 'मौसिकी'(संगीत) का रंग दिया। अमीर खुसरो ने फारसी और हिन्दुस्तानी भाषा को समीप लाने का जो क्रान्तिकारी प्रयत्न किया उसकी परम्परा आगे के युगों में तेज गति से नहीं बढ़ पाई। इसी प्रकार दक्षिण क्षेत्र में एक भाषा विकसित हुई जो 'दखिनी' कहलाई। इस भाषा के शायरों ने अपनी गज़लों में हिन्दुस्तानी वातावरण को सफलतापूर्वक उभारा।

17वीं शताब्दी में औरंगाबाद में 'वली'(1668–1744) जो उर्दू गज़ल के पितामह मान गए वह दिल्ली गए एवं उन्होने उत्तर की उर्दू को अपनाया। इस प्रकार ये प्राचीन दखनी और उर्दू को जोड़ने वाली कड़ी बन गए। ये ही उर्दू गज़ल के युग–प्रर्वतक शायर हुए हैं जिसने सबसे पहले दखनी और उत्तर भारत की साहित्यिक परम्पराओं का समन्वय कर उन्हें एक धागे में पिरोया।

18वीं शताब्दी के आरम्भ में दिल्ली एवं दिल्ली के आसपास उर्दू गज़ल के कई शायर हुए जिनमें सबसे उल्लेखनीय ''सिराजुदीन आरजू''(1689–1756) हुए जिन्होंने फारसी शायर 'बेदिल' की परम्पराओं को उर्दू में सम्मिलित किया। इसी युग में मुशायरों का चलन भी प्रचलित हुआ।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में दिल्ली फिर उर्दू गज़ल का प्रमुख केन्द्र बनी और इस युग के उल्लेखनीय शायर शाह नसीर, जौक, गालिब, मोमिन तथा बादशाह बहादुर शाह ज़फर हुए। यह दौर उर्दू शायरी का सुनहरी दौर कहलाया। जौक ने ज़बान की सफाई पर ज्यादा ध्यान दिया। मोमिन ने इश्क़–ए–मिज़ाज़ी को अपना मैदान बनाया और इस मैदान को कभी छोड़ना पसन्द नहीं किया। 'गालिब' की कविता के हृदय की महीन से महीन तरंग का स्पष्ट दर्शन मिलता है। इनके शेरों की भाषा उत्प्रेक्षा, शब्द विन्यास और उपमायें एक से एक निराली हैं।

20वीं शताब्दी में उर्दू के महन गज़ल शायर मोहम्मद इकबाल (1874–1938) हुए। प्रमुख रूप से ये उर्दू की नई नज़्म के युग–प्रर्वतक शायर थे परन्तु इन्होंने उर्दू गज़ल को दर्शन की नई राहों से भी परिचित कराया। इनके समकालीन ही उर्दू गज़ल के प्रमुख शायरों में फानी बदायूँनी, असगर गोंडवी, हसरत मोहानी, जिगर मुरादाबादी और यगाना चंगेजी गज़ल के उल्लेखनीय शायर हुए। इन शायरों के समकालीन गज़ल के एक प्रमुख शायर उल्लेख किया जाना अत्यन्त आवश्यक है इनका नाम 'रघुपति सहाय' एवं उपनाम 'फिराक गोरखपुरी' है। इनकी खूबी यह है कि इन्होने एहसास–ए–ज़माल को जीवन और कायनात को समझने के लिए मूल्य के रूप में इस्तेमाल किया।

## निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः कह सकते हैं कि गज़ल की उत्पति फारसी देशों में हुई। यह सर्वप्रथम ईरान तुर्की आदि देशों से आक्रमणकारियों के साथ भारत पहुँची। इसकी उत्पत्ति फारस के लोकसंगीत से हुई और भारत में मुगल शासकों के आश्रय में उर्दू गज़ल का विकास 13वीं शताब्दी से आरम्भ होकर 20वीं शताब्दी से होता हुआ 21वीं शताब्दी तक लगातार हो रहा है। गज़ल का यह लम्बा सफर कभी भी उबाने वाला या थकाने वाला नहीं रहा। आधुनिक दौर के शायरों में मुईन अहसन ज़ज़्बी, मजरूह सुल्तानपुरी, फैज़ अहमद फैज़, हफीज़ जालन्धरी, फतील शिफाई, सैफूदीन सैफ, जाँ निसार अख्तर, एहसान दानिश, अब्दुल हमीद अदम, बशीर बद्र, निदा फाज़ली, केसर–उल–ज़ाफरी, शहरयार व मुम्जाज़ राशीद इत्यादि के नाम प्रमुख हैं। हर युग की ज़रूरतों को गज़ल ने ऐसे अन्दाज़ में अपने आप में संजोया है कि वह हर दौर की पहचान और आवाज़ बन गई

तथा हर दौर में हर मज़हब और हर प्रान्त के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती रही। पूरी सम्भावना है कि आने वाली सदियों में भी गज़ल इसी तरह नई ताज़गी के साथ लोकप्रिय होती रहेगी।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आस, सत्येन्द्र प्रकाश नन्दा, आग और आँसू (गज़ल संग्रह), 1997।

आवदी, अमीर हसन्, अमीर खुसरो और सबक्–ए–हिन्दी(खुसरो शनासी), 1975।

कुरैशी, कामिल, उर्दू–गज़ल, 1987।

खलील, अब्दुल अहमद खाँ, उर्दू गज़ल के पच्चास साल, 1987।

गर्ग, लक्ष्मी नारायण, संगीत गज़ल अंक, संगीत कार्यालय हाथरस, 1967।

जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, 1969।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE